ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या–31
दिनांक– मंगलवार, 23 अप्रैल, 2024

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 39.0 एवं 21.7 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 61 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 30 प्रतिशत, हवा की औसत गति 22.7 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पन 8.6 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 7.7 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 25.8 एवं दोपहर में 37.5 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(24–28 अप्रैल, 2024)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 24–28 अप्रैल, 2024 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में अगले दो दिनों तक आसमान में हल्के बादल आ सकते है। हालांकि, पूरे पूर्वानुमानित अवधि में मौसम के शुष्क रहने की संभावना है।
- इस अवधि में अधिकतम तापमान 40–42 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है। जबकि न्यूनतम तापमान 24–26 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है। इस अवधि में हीट वेव तथा प्रचंड गर्मी की स्थिति बनी रहने का अनुमान है। हीट वेव से राहत मिलने की सम्भावना बहुत कम है।
- इस अवधि में सतही हवा की गति तेज रह सकती है। औसतन 16 से 20 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चलने की सम्भावना है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 60 से 70 प्रतिशत तथा दोपहर में 30 से 40 प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- पूर्वानुमानित अवधि में मौसम के शुष्क एवं गर्म मौसम रहने की संभावना को देखते हुए किसान भाई गेहूँ, अरहर एवं मक्का फसल की कटनी एवं दौनी के कार्य को प्राथमिकता दें। गेहूँ एवं मक्का के दानों को अच्छी तरह धूप में सूखाने के बाद भंडारण करें। भंडारण के लिए जुट के बोरे की व्यवस्था कर लें एवं बोरे को पलटकर अच्छी प्रकार घुप में सुखाकर कीट रहित कर लें।
- ओल की फसल की रोपाई शीघ्र संपन्न करें। रोपाई के लिए गजेन्द्र किस्म अनुशंसित है। ओल की कटे कन्द को ट्राइकोर्डमा भिरीडी दवा के 5.0 ग्राम प्रति लीटर गोबर के घोल में मिलाकर 20–25 मिनट तक डुबोकर रखने के बाद कन्द को निकालकर छाया में 10–15 मिनट तक सुखने दें उसके बाद उपचारित कन्द को लगायें ताकि मिट्टी जनित बीमारी लगने की संभावना को रोका जा सके तथा अच्छी उपज प्राप्त हो सके।
- रबी फसल की कटाई के बाद खाली खेतों की गहरी जुताई कर खेत को खुला छोड़ दें ताकि सुर्य की तेज धुप मिट्टी में छिपे किड़ों के अण्डे, प्युपा एवं घास के बीजों को नष्ट कर दें।
- हल्दी एवं अदरक की बुआई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में प्रति हेक्टेयर 25 से 30 टन गोबर की सड़ी खाद डाले। 15 मई से किसान भाई हल्दी एवं अदरक की बुआई कर सकते हैं।
- लत्तर वाली सब्जियों जैसे नेनुआ, करैला, लौकी (कद्दू), और खीरा में लाल भृंग कीट से बचाव हेतु डाइक्लोरवाँस 76 इ0सी0 / 1 मि0ली0 प्रति ली0 पानी की दर से छिड़काव करे।
- मूंग व उरद् की फसलों में सघन रोमोवाली सुंडिया की निगरानी करें। इनके सुंडियो के शरीर के उपर काफी घने बाल पाये जाते है। यह मूंग एवं उरद् के पौधों के कोमल भागों विषेषकर पत्तियों को खाती है। इनकी संख्या अधिक रहने पर कभी–कभी केवल डण्ठल ही शेष रह जाती है। इस प्रकार इस कीट से फसल को काफी नुकसान एवं उपज में काफी कमी आती है। रोक–थाम हेतु फसल में मिथाइल पैराथियान 50 ई0सी0 दवा का 2 मि0ली0 / लीटर या क्लोरपाईरिफॉस 20 ई0सी0 दवा का 2.5 मि0ली0 / लीटर पानी की दर से घोल बनाकर फसल में छिडकाव करें।
- बसंतकालीन मक्का, पिछात बोयी गई रवी मक्का, प्याज, सब्जियों की फसल एवं चारा फसलों में सिंचाई शाम के समय में करें। ध्यान दें कि, सिंचाई करते समय हवा की गति कम हों।
- आम के बगीचों में नमी बनाये रखें। आम के पेड़ में मिलीबग (दहिया कीट) की निगरानी करें। यह कीट चिपटे गोल आकार के पंखहीन तथा शरीर पर सफेद दही के रंग का पॉउडर चिपका रहता है। यह आम के पेड़ में मुलायम डालों और मंजर वाले भाग में बहुतो की संख्या में चिपका हुआ देखा जा सकता है तथा यह उन हिस्सों से लागातार रस चुसता रहता है जिससे अक्रान्त भाग सुख जाता है तथा मंजर झड़ जाते हैं। इस कीट से रोकथाम हेतु डाइमेथोएट 30 ई0सी0दवा का 1.0 मि0ली0 / लीटर पानी की दर से घोल बनाकर पेड़ पर समान रुप से छिडकाव करें।
- लीची के पेड़ में फल बेधक कीट के शिशु जो उजले रंग के होते हैं। यह फलों के डंठल के पास से फलो में प्रवेश कर गुदे को खाते हैं जिससे प्रभावित फल खाने लायक नहीं रहता। इस कीट से वचाव हेतु लीची के पत्तियों एवं टहनियों पर प्रोफेनोफॉस 50 ई0सी0 का 10 मि0ली0 या कार्बारिल 50 प्रतिशत घुलनशील पॉवडर का 20 ग्राम दवा को 10 लीटर पानी में घोलकर अप्रैल माह में 15 दिनों के अन्तराल पर प्रति पेड़ की दर से दो छिड़काव करें।
- खरपतवार रोग एवं कीट नियंत्रण हेतु पड़ती खेत की ग्रीष्मकालीन जुताई करें। कीट नियंत्रण हेतु बसंतकालीन ईख तथा गरमा फसलों पर कीटनाशक एवं फफूंदनाशक दवाओं का व्यवहार करें। हरा चारा के लिए मक्का, ज्वार, बाजरा तथा लोबिया की बुआई करें।
- हीट वेव की स्थिति को देखते हुए पालतू जानवरों तथा दुधारू पशुओं के रख रखाव तथा खान पान की विशेष ध्यान रखें। छायादार स्थानों पर रखें। स्वच्छ पानी पिलायें।

आज का अधिकतम तापमानः 39.5 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 3.3 डिग्री सेल्सियस अधिक	आज का न्यूनतम तापमानः 23.1 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 0.4 डिग्री सेल्सियस अधिक

(डॉ0 गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी / वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

(डॉ0 ए. सत्तार)
वरीय वैज्ञानिक सह नोडल पदाधिकारी (कृषि मौसम)